द्वितीयः पाठः - बुद्धिर्बलवती सदा (कथा)

1. पाठ परिचय

यह एक अत्यंत रोचक कथा है जो **'शुकसप्ततिः'** नामक प्रसिद्ध कथा ग्रन्थ से ली गई है। इसमें एक बुद्धिमती स्त्री अपनी चतुराई से भयंकर बाघ (Tiger) से अपने प्राणों की रक्षा करती है। यह पाठ सिखाता है कि "संसार में बुद्धि ही हमेशा सबसे बलवान होती है।"

2. कथा का विस्तृत सार

देउलाख्य नाम के गाँव में राजसिंह नाम का राजपुत्र रहता था। उसकी पत्नी का नाम **'बुद्धिमती'** था। एक बार वह किसी आवश्यक कार्य से अपने दोनों पुत्रों के साथ पिता के घर जा रही थी।

बाघ से सामना: रास्ते में घने जंगल में उसने एक बाघ को आते देखा। वह डरी नहीं। उसने साहस से काम लेते हुए अपने दोनों बेटों को थप्पड़ मारते हुए कहा, "अरे! तुम दोनों एक बाघ को खाने के लिए क्यों झगड़ रहे हो? अभी इसी एक बाघ को बाँट कर खा लो, बाद में कोई दूसरा खोज लेंगे।"

बाघ का भय: यह सुनकर बाघ को लगा कि यह कोई **'व्याघ्रमारी' (बाघ को मारने वाली स्त्री)** है, जिसके बारे में शास्त्रों में सुना जाता है। यह सोचकर बाघ डर के मारे वहाँ से भाग गया।

सियार का आना: डर कर भागते हुए बाघ को देखकर एक सियार (Jackal) उस पर हँसने लगा। सियार ने कहा, "आप इंसान से डर कर भाग आए?" बाघ ने कहा कि वह व्याघ्रमारी है। सियार ने कहा, "चलिए, मैं आपके साथ चलता हूँ। यदि वह आपको कुछ कहे तो मुझे मार देना।" दोनों ने एक-दूसरे को गले में बाँध लिया और फिर से उस स्त्री के पास गए।

बुद्धिमती की चतुराई: बुद्धिमती ने जब सियार के साथ बाघ को वापस आते देखा, तो उसने फिर से अपनी बुद्धि का प्रयोग किया। उसने सियार को डाँटते हुए कहा, "रे धूर्त! तूने मुझे पहले तीन बाघ ला कर दिए थे, आज विश्वास दिला कर भी केवल एक ही बाघ क्यों लाया है?" यह सुनकर बाघ को लगा कि सियार ने उसे धोखा दिया है और वह व्याघ्रमारी के पास मरने के लिए ले आया है। बाघ तुरंत वहाँ से जान बचाकर भाग गया और बुद्धिमती अपने बच्चों के साथ सुरक्षित बच गई।